PC-10151/NK

Q-3/2111

हिन्दी काव्य-I

P-101 HINM2 PUPT

(Semester-I)

(Regular & DE)

Time : 3 Hours] [Max. Marks : 75

नोट : यह प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित है। निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

खण्ड - क

I. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (3×6=18)

(क) सैसव-जौवन दुँहु मिलि गेल।
स्रवनक पथ दुँहु लोचन लेल।।
बचनक चातुरि लहु-लहु हास।
धरनिय चाँद कयल परगास।।
मुकुर लई अब करइ सिंगार।
सब पूछइ कइसे सुरत बिहार।।

अथवा

सखि हे बालम जितब बिदेस।
हम कुलकामिनी कहइत अनुचित।

तोहहुँ दे हुनि, उपदेस।।
ई न विदेसक बेलि।
दुरजन हमर दुख न अनुमापब।
ते तोंहे पिया लग मेलि।।

(ग) साधो भाई, जीवत ही करो आसा।
जीवत समझे जीवत बूझे, जीवत मुक्तिनिवासा।
जीवन करम की फाँस न काटी, मुये मुक्ति की आसा।
तन छूटे जिव मिलन कहत हैं, सो सब झूठी आसा।
अबहुँ मिला तो तबहुँ मिलेगा, नंहि तो जम पुरबासा।
सत्त गहे सतगुरू को चीन्हें, सत्त-नाम विस्वासा।
कहै कबीर साधन हितकारी, हम साधन के दासा।।

अथवा

(घ) अरे मन धीरज काहे न धरै।
पसु-पंछी जीव कीट-पतंगा सबकी सुद्ध करै।
गर्भ बास में खबर लेतु है बाहर क्यों बिसरै।
मन तू हसन से साहेब के भटकत काहै फिरै।
प्रीतम छाँड और को धारै, कारज इक न सरै।

(ङ) सावन बरिस मेह अति पानी। भरनि भरइ हौं बिरह झुरानी।
लागु पुनर्बसु पीउ न देखा। भै बाउरि कहँ कंत सरेखा।
रक्त क आँसु परे भुइँ टूटी। रेंगि चली जनु बीर बहूटी।
सखिन्ह रचा पिउ संग हिँडोला। हरियर भुइँ कुसुंभि तन चोला।
हिय हिँडोल जस डोलै मोरा। बिरह झुलावै देइ झँकोरा।
बाट असूझ अथाह गँभीरा। जिउ बाउर भा भवै भँभीरा।

अथवा

(च) भई पुछारि लीन्ह बनवास्। बैरिनि सवति दीन्ह चिल्हवाँस्।
कै खर बान कसै पिय लागा। जौं घर आवै अबहूँ कागा।
हारिल भई पंथ मैं सेवा। अब तहँ पठवौं कौनु परेवा।
धौरी पंडुक कहु पिय ठाऊँ। जौ चित्त रोख न दोसर नाऊँ।
जाहि बया गहि पिय कँठ लक। करे मेराउ सोई गौरवा।
कोइलि भई पुकारत रही। महरि पुकारि लेहु रे दही।

खण्ड - ख

II. निम्नलिखित प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। (3×9=27)

(i) विद्यापति 'भक्त या श्रृंगारी कवि' सिद्ध कीजिए।

अथवा

(ii) गीतिकाव्य धारा में विद्यापति का स्थान निर्धारित कीजिए।

(iii) कबीर के रहस्यवाद पर प्रकाश डालें।

अथवा

(iv) कबीर के समाज-सुधारक रूप पर चर्चा करें।

(v) 'पदमावत् महाकाव्य है।' सिद्ध करें।

अथवा

(vi) जायसी के काव्य की विशेषताओं पर चर्चा करें।

खण्ड - ग

III. सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं : (6×5=30)

(i) विद्यापति की भाषा-शैली पर नोट लिखें।

(ii) विद्यापति की रचनाओं पर प्रकाश डालें।

(iii) कबीर की उल्टबाँसियों पर चर्चा करें।

(iv) कबीर की वाणी में गुरु के महत्व को स्पष्ट करें।

(v) नागमती विरह वर्णन पर संक्षेप में चर्चा करें।

(vi) पदमावत के प्रकृति चित्रण पर दृष्टि डालें।